डॉ. बिन्द कुमार चौहान

जन्म : 01 जनवरी, 1980

ग्राम : 4 नं. नवाईबिल, जिला– पश्चिम कार्बी आंगलंग (असम)

शिक्षा : बी. ए. – होजाई कॉलेज, होजाई
एम. ए. (हिंदी) : गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी (असम)
बी. एड. : कृष्ण बोरा बी. एड. कॉलेज, लंका (असम)
एम. एड. : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
पी–एच. डी. (हिंदी) : असम विश्वविद्यालय, सिलचर (असम)
जे. एन. भी., आर. सी. घाट, खोवाई, त्रिपुरा, कृष्ण बोरा बी. एड. कॉलेज, लंका, (असम), कुमारी लक्ष्मी बधाला महिला बी. एड. कॉलेज, गोविंदगढ़, जयपुर (राजस्थान), होजाई कॉलेज, होजाई (असम), कपिली कॉलेज, खेरनी, प. कार्बी आंगलंग (असम) व केंद्रीय हिंदी संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी में अध्यापन–अनुभव।

संप्रति : सन् 2016 से बंगाईगाँव कॉलेज, बंगाईगाँव के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में अध्यापन।

संपर्क : सावित्री निवास, वार्ड नं. 16, आर. के. मीशन रोड, नतुनपारा, बंगाईगाँव (असम) पिन–783380

चलभाष : 8638283868

हंस प्रकाशन

email : hansprakashan88@gmail.com
website : www.hansprakashan.com

₹ 695/-

ISBN : 978-93-89389-42-5

नाट्य सहचरी

प्रधान संपादक डॉ. बिन्द कुमार चौहान

संपादक जैनेन्द्र चौहान, संगीता कुमारी पासी

नाट्य सहचरी

प्रधान संपादक
डॉ. बिन्द कुमार चौहान

संपादक
जैनेन्द्र चौहान
संगीता कुमारी पासी

प्रथम संस्करण : 2021

ISBN : 978-93-89389-42-5

© सम्पादक

मूल्य : ₹ 695/-

प्रकाशक

हंस प्रकाशन
(पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स)
बी-336/1, गली नं. 3, दूसरा पुस्ता,
सोनिया विहार, नई दिल्ली-110094
दूरभाष : 9868561340, 7217610640
email : hansprakashan88@gmail.com
website : www.hansprakashan.com

विक्रय कार्यालय :
4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 7217610640

टाईप सेटिंग : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-94

मुद्रक : एस. के. ऑफसेट, दिल्ली

नाट्य सहचरी

प्रधान संपादक
डॉ. बिन्द कुमार चौहान

संपादक
जैनेन्द्र चौहान
संगीता कुमारी पासी

हंस प्रकाशन
नई दिल्ली

16. ऐतिहासिकता बनाम आधुनिकता या राजसत्ता बनाम सर्जनात्मकता (आषाढ़ का एक दिन) 104
डॉ. आजेंद्र प्रताप सिंह

17. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में आधुनिकता का नया आयाम 118
डॉ. सतीश पावड़े

18. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में आधुनिकताबोध 124
संतोष कुमारी

19. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में मानव-मूल्य 132
संगीता कुमारी पासी

20. राज्याश्रय, अभिव्यक्ति, राजनीति और कालिदास : 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के संबंध में 137
प्रो. (डॉ.) किरण खन्ना

21. 'अंधा युग' की प्रासंगिकता 144
डॉ. नंदिता दत्त

22. धर्मवीर भारती और अंधा युग 152
संगीता सिंह राय

23. धर्मवीर भारती और अन्धा युग 160
एमन्त माधुरी ठाकुर

24. 'अंधा युग' नाटक का भविष्य और भविष्य का नाटक 170
डॉ. जोतिमय बाग

25. धर्मवीर भारती और अंधा युग 174
कृष्ण बिहारी पाठक

26. शोषण का दस्तावेज 'बकरी' 181
डॉ. सर्वमंगला. के.मेलगी

27. 'महाभोज' नाटक में राजनीतिक यथार्थ 184
डॉ. बिजेंद्र कुमार

28. 'एक और द्रोणाचार्य' नाटक में शिक्षा की प्रासंगिकता 194
निर्मल हिरल डी.

29. 'एक और द्रोणाचार्य' : शिक्षा-व्यवस्था और मानवीय मूल्यों पर प्रहार 201
जय कुमार पंडित

30. 'आषाढ़ का एक दिन' में नारी का स्वरूप' 207
अमित कुमार दूबे

31. नाट्य सहचरी के ठप विषय और विद्वानों का परिचय 215

'महाभोज' नाटक में राजनीतिक यथार्थ

डॉ. बिजेंद्र कुमार

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र या देश की उन्नति में उस देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जिस देश में राजनीतिक नेतृत्व सुदृढ़ एवं निःस्वार्थ भाव से कार्य करेगा, उस देश का समाज संपन्न एवं मूल्यों को मानने वाला होगा। लेकिन जिस देश में केंद्रीय नेतृत्व का अभाव एवं राजनीतिक स्वार्थ का भाव होगा वहाँ की जनता निर्धनता तथा बेबसी का जीवन जीने के लिए विवश होगी। भारतवर्ष के संदर्भ में भी यही बात लागू होता है। सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के उपरांत भारतवर्ष अनाथ हो गया और केंद्रीय सत्ता के अभाव में, हजारों वर्षों तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा और जब आजाद हुआ तो भी यहाँ के राजनेताओं में एकता, अनुशासन एवं सुदृढ़ नेतृत्व का अभाव था। जिस कारण भारतवर्ष आज भी एक समृद्ध एवं विकसित राष्ट्र नहीं बन पाया। हिंदी साहित्य ने भारतवर्ष कि इन राजनीतिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया। अनेक कवियों, कहानीकारों, उपन्यासकारों, नाटककारों आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से राजनीतिक विद्रूपताओं को चित्रित कर, सामान्य जन को सचेत एवं जागरूक करने का भरसक प्रयास किया ताकि भारतवर्ष की जनता अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो जाए। उसमें वोट का अधिकार एक महत्वपूर्ण अधिकार है जिसके सही उपयोग द्वारा ईमानदार एवं शिक्षित नेताओं को आगे लाया जा सकता है। क्योंकि भारतवर्ष एक लोकतांत्रिक प्रणाली वाला देश है, जिसमें जनता की चुनी हुई सरकार काम करती है। तो ऐसे में आम आदमी के द्वारा अपनी वोट का उचित प्रयोग अति आवश्यक हो जाता है ताकि ईमानदार एवं संवेदनशील सरकार का चयन किया जा सके। आम आदमी द्वारा वोट के महत्व को ना समझ पाने के कारण ही भ्रष्ट, अपराधी एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के लोग राजनीति में आ गए है। जिन्हें देश या राष्ट्र से कोई मतलब नहीं है। ऐसे राजनेता केवल अपना हित साधते हैं। जनता का हित उनके